Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

आधुनिकता एवं यथार्थवाद

पवन कुमार राय[1]

साहित्य जीवन की व्याख्या है। समाज, साहित्य व जीवन में नित्य परिवर्तन एक चिरकालिक प्रक्रिया है। परिवर्तन की यह प्रक्रिया ही आधुनिकता की जननी है। इस दृष्टिकोण से साहित्य के क्षेत्र में होने वाला प्रत्येक परिवर्तन उसे क्रमशः आधुनिक बना रहा है। पुराने विचार, सोच, व्यवहार एवं क्रियाविधि में होने वाला प्रत्येक परिवर्तन उसकी आधुनिकता को पुष्ट करता रहा है। विशिष्ट अर्थ में 'आधुनिकता' भारतीय इतिहास, समाज तथा साहित्य के क्षेत्र में उस विशिष्ट कालावधि का द्योतक है जो मध्यकालीन युग की परलौकिक केचुली से उबरकर नवीन युग की इहलौकिक चेतना से जुड़ती है।

आधुनिक, आधुनिकता, आधुनिकतावाद या आधुनिकरण आदि सभी शब्दों की निर्मिति संस्कृत के 'अधुना' शब्द से हुयी है, जिसका अर्थ है अभी–अभी या तत्काल। अंग्रेजी भाषा में आधुनिकता का समानार्थी शब्द 'माडर्निटी' है। आधुनिकतावाद का तात्पर्य आंग्ल भाषा के मार्डिनिज्म से है। आधुनिकता तथा आधुनिकतावाद को समरस नही किया जा सकता क्योंकि दोंनो में पर्याप्त भिन्नता है। हिन्दी में आधुनिकता एक व्यापक अर्थ को संकेतिक करता है जबकि आधुनिकतावाद एक मात्र साहित्य कलागत आंदोलन के अर्थ और प्रकृति को । हिन्दी में आधुनिकता की शुरुआत हिन्दी नवजागरण से और आधुनिकतावाद की शुरुआत प्रयोगवाद या उसके आस पास से होती है। हिन्दी की आधुनिकता का उद्भव और विकास एक स्वभाविक प्रक्रिया का अंग था जबकि आधुनिकतावाद पाश्चात्य आधुनिकता से प्रभावित था। साहित्य और कला के क्षेत्र में आन्दोलन के रुप में आधुनिकतावाद का उद्भव एवं विकास यूरोप में उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दौर से प्रारम्भ होकर बीसवीं सदी के तीसरे दशक तक अपनी चरमावस्था में पहुँचा था। **"आधुनिकतावाद संज्ञा एक विशिष्ट दृष्टि मंगी का द्योतक है, एक खास ताजा मनः स्थिति की द्योतक है, जिसको आधुनिक कला साहित्य ने अभिव्यक्त किया है ।" (आधुनिकतावाद और साहित्य– दुर्गा प्रसाद गुप्त)**

साहित्य और सिद्धान्त के क्षेत्र में आधुनिकता और आधुनिकतावाद शब्द की अनेक परिभाषाओं और व्याक्खाओं से ऐसी भ्रमपूर्वक स्थिति का सृजन हुआ है जिसमें भटकना अप्रत्याशित नही लगता। कारण यह है कि दोनों शब्दों का परिवेश एक है पर सन्दर्भ अलग–अलग। आधुनिकता एक व्यापक अर्थ है और प्रकृति को और आधुनिकतावाद साहित्य कलागत आन्दोलन की अवधारणात्मक अर्थ, प्रकृति और सिद्धान्त को द्योतित करता

[1] शोध छात्र. हिन्दी विभाग, जय प्रकाश विश्वविद्यालय छपरा

है। इस तरह पश्चिम में आधुनिकता का आरम्भ ज्ञानोदय से और आधुनिकतावाद का आरम्भ स्वच्छन्दतावाद के बाद से होता है और वह भी **अवांगार्दो** के विभिन्न साहित्यिक कलागत आन्दोलनों से। वैश्विक आधुनिकतावाद का आन्दोलन एक समावेशी आन्दोलन है, जिसे पूंजीवाद के अन्तर्विरोधों ने ही सृजित किया है ।

वास्तव में आधुनिकता मानव सामाजिक गतिकी के साथ नित्य परिवर्तित होने वाली अवधारणा है। जो कुछ आज आधुनिक है वह कल पुराना हो जायेगा तथा उसके स्थान पर नये तथ्य नये विचार व नई अवधारणाएं आ जायेंगी। हिन्दी साहित्य में आधुनिक शब्द मध्य काल की प्रवृतियों एवं विचार से अलग होने का सूचक है जो मनुष्य के चिन्तन को इहलौकिकता की ओर उन्मुख करती है। आधुनिक और आधुनिकता में अन्तर है। आधुनिक मध्यकाल से अलग होने की सूचना देता है। आधुनिक वैज्ञानिक आविष्कारों एवं औद्योगिकरण का परिणाम है, जबकि आधुनिकता औद्योगिकरण की अतिशयता महानगरीय एकरसता, दो महायुद्धों की विभिषिका का फल है। वस्तुतः नवीन ज्ञान विज्ञान, टेक्नोलाजी के फलस्वरुप उत्पन्न विषम मानवीय स्थितियों के नये गैर रोमांटिक और अमिथकीय साक्षात्कार का नाम **आधुनिकता** है। औद्योगिक क्रान्ति के साथ दुनिया के देशों में पुनर्जागरण (रेनेसा) आया। इस दौर में बहुत से औपनिवेशिक देश मुक्त हुए तथा नये सपने संजोये अपने अपने ढंग की सरकारें बनायीं किन्तु एक बिन्दु पर खड़े होकर मनुष्य ने देखा कि जिस औद्योगिकरण एवं प्राविधीकरण के सहारे उसने अपना भाग्य बदलने का सुखद सपना देखा था वह साकार नही हुआ। लोकतांत्रिक तथा साम्यवादी सरकारें समान रुप से असफल सिद्ध हुयी। मनुष्य या तो व्यवस्था का पुर्जा हो गया या प्रविधि का। उसकी अपनी व्यक्तित्व व पहचान खो गयी। इस खोये हुए व्यक्तित्व की खोज प्रक्रिया का नाम आधुनिकता है ।

नवीन ज्ञान विज्ञान, औद्योगीकरण एवं प्रोद्योगीकरण ने मनुष्य की चेतना व सोच समझ में आमूल चूक परिवर्तन किया। बौद्धिकता एवं वार्मिकता की वृद्धि के साथ नीत्से की इस घोषणा से कि '' ईश्वर मर गया'' बौद्धिक जगत में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया और यथार्थ का स्वरुप ही बदल गया। पाप–पुण्य, धर्म–अधर्म, अच्छे–बुरे की जो कसौटियां धर्मग्रन्थों ने तय की थी, उनकी प्रभाविकता समाप्त हो गयी। पुराने मूल्य विघटित हो गये। मनुष्य ने पाया कि वर्तमान स्थिति में वह असहाय,छुद्र और निरर्थक प्राणी है। विज्ञान की प्रगति ने भी निश्चयवादी सिद्धान्त को खोखला सिद्ध कर दिया। फ्लैंक के क्वांटम सिद्धान्त और आइन्सटीन के सापेक्षतावाद से यह सिद्ध हो गया कि ना तो कोई सार्वभौम सत्य होता है और ना साश्वत नैतिकता। अणुओं की **सत्ता** के असिद्ध हो जाने के बाद अणु शक्ति (उर्जा) में बदल जाता है और शक्ति अणु में । निश्चयात्मकता की समाप्ति की अन्तिम घोषणा हो गयी। अस्तीत्ववादी दशैन ने इस पर अपनी मुहर लगाकर इसे और भी पुष्ट कर दिया। इस दर्शन ने वैज्ञानिक अमूर्तता पर प्रहार करते हुए स्वयं को ठोस अनुभवों तथा आम लोगों के उन बुनियादी सवालों से जोड़ा जो उनके

जीवन से गहरे रुप से जुड़ हों। वे सवाल थे मनुष्य की आन्तरिक बैचेनी, दुःख, जीवनव्यापी निराशा, कुण्ठा, अकेलापन, त्रास, मृत्युबोध, आजादी आदि ही मनुष्य के निजी आस्तीत्व पर सवाल उठाने वाले तथा उसे मनुष्यता से दूर करने वाले प्रत्येक विचारों तथा क्रियाओं पर इस दर्शन ने प्रहार किया। उसका मानना था कि मनुष्य एक स्वतंत्र चेत्ता प्राणी है वह पदार्थ या मशीन नही है। अपने जीवन तथा गतिविधियों के सम्बन्ध में निर्णय लेने के लिए मनुष्य स्वतंत्र है तथा अपने प्रत्येक सोच व निर्णय के लिए वह खुद जिम्मेदार भी है। इस सम्बन्ध में **हेडेगर, जौस्पर्स, मर्सेल, सात्र तथा किर्कगार्द** के आस्तत्ववादी विचारों ने व्यापक रुप से आधुनिक पश्चिमी साहित्य को प्रभावित किया ।

बीसवीं सदी की दुनिया मात्र औद्योगिक एवं मशीनी सभ्यता की दुनिया नही है अपितु वह उपभोक्तावादी संस्कृति और सभ्यता की भी दुनिया है और इस दुनिया का विकास पूंजीवादी ढांचे के अन्तर्गत हुआ है। वास्तव में इस दौर में पूंजीवादी समाज की जो समस्याओं तथा अन्तर्विरोध कर उभर कर आते हैं इन्हें ही कला तथा साहित्य के अन्तर्विरोध के रुप में भी स्वीकार किया गया, जिसे अवागोर्दो ने अपने चिंतन एवं आन्दोलनों में ध्वनित किया। इस पूंजीवादी विचार ने उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद, सामाज्यवाद और बाजारवाद के विस्तार में ही फांसीवादी विचार को उत्पन्न किया जिसके परिणामस्वरुप मानवता को दो विश्वयुद्धों की भयंकार विभिषिका झेलनी पड़ी। नागासाकी और हिरोशिमा साम्राज्यवाद और फांसीवाद के जीवंत उदाहरण हैं। इस समय वैज्ञानिक विचारों की तर्किकता तथा तथ्यपरखता ने लोगों को धर्म की अतार्किकता से अवगत कराया और मध्ययुगीन धार्मिक सत्ता, आध्यात्मिक विचार और आधुनिक, औद्योगिक, प्रौद्योगिक विज्ञान की सत्ता के बीच संघर्ष हुआ। इस सम्बन्ध में डा. गंगा प्रसाद विमल का कथन दृष्टव्य हैः– ''अतीत और वर्तमान के संघर्ष ने जिस आधुनिकता को जन्म दिया उनकी निर्मिति में अतीत का त्रासद बोध चाहे ना हो, किन्तु उनकी त्रासदी यही है कि उनके त्रासद के लिए कोई गरिमापूर्ण आख्यान पर्याप्त नही लगता। ठीक जैसे संशय के भीतर निवसित संशय के लिए विश्वास का रुपान्तरण भी अपर्याप्त शब्द नही है'' ।(आधुनिकता के पहलू–गंगा प्रसाद विमल) ।

हिन्दी के प्रसिद्ध प्रयोगवादी कवि अज्ञेय आधुनिकता की अवधारणा को समय की अवधारणा से जोड़ करके देखते हैं। अज्ञेय के अनुसार 'किसी भी कला में आधुनिकता की विकास प्रक्रिया देखने चलें तो हम पाएंगे कि उसके मूल में यह नया काल बोध ही है, काल के साथ नया सम्बन्ध ही है। मानस का विखण्डन, खण्डित बिम्ब, अमूर्तन, अतियथार्थ की प्रस्तुति, मिथक और फैंटेसी, कारण और कार्य में विपर्यय अथवा अहेतुक घटना 'मुक्त छंद' ताल और लय की टकराहट अथवा संकट किसी भी कला में कोई नई प्रवृति लिजिए तो वह कहीं ना कहीं नये काल बोध से उसके सम्प्रेक्षण के प्रयत्न से

जुड़ जायेगी। (अज्ञेय, धार और किनारे पृ0 100)। वे आधुनिकता के विचार को एक नये ढंग का काल बोध मानते हैं और उसे संवेदन के संस्कार के रुप में स्वीकार करते हैं, जो विज्ञान की देन है। उन्होंने लिखा हैः– आधुनिकता जिस नये प्रकार का कालबोध है, वह दोनों प्रकार की कालबोध की अवधारणा को स्वीकार करता है और समानान्तर रखता है, समपदीय महत्व देता है और इतना ही नही, यह भी समझाता है कि विज्ञान की प्रगति ने ही यह सम्भव बनाया है कि हम काल की इतने प्रकार की गतियों को पहचाने और एक साथ स्वीकार करें और काल गति की यही स्वीकार ही वास्तव में आधुनिक संवेदन है, आधुनिकता है। (अज्ञेय– धार और किनारे पृ0 99) ।

हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक डा. नामवर सिंह ने मार्शल वर्गमैन की पुस्तक ''आल दैट इज सालिड मिक्स्ड इनटू एअर'' को उदृत करते हुए कहा है –''वर्गमैन ने यह दिखाने की कोशिश की है कि आधुनिकता की उत्पत्ति आधुनिकरण के बिना सम्भव ही नही थी।'' आधुनिकरण और आधुनिकता को व्याख्यायित करते हुए उन्होंने कहा–'' आधुनिकरण के बीच आधुनिकता वस्तुतः एक अनुभव है जो मध्य युग में सम्भव नही था। इसी दौर में मानवीय सम्बन्धों को आना, पाई–कौड़ी, में बदल देने वाली उस डिह्यूमनाइजेशन की प्रक्रिया के बीच यह अनुभव सम्भव था। इसलिए आधुनिकरण का सत्सार आधुनिकता है। आचार्य शुक्ल कहते थे कि 'बैर क्रोध का आचार या मुरब्बा' है। उसी प्रकार 'आधुनिकता' आधुनिकरण का आचार या मुरब्बा है। धर्म की रसात्मक अनुभूति का नाम भक्ति था, आधुनिक युग की रसात्मक अनुभूति आधुनिकता है। (शताब्दी का अवसान और उत्तर आधुनिकता, नामवर सिंह, 'पूर्वाग्रह अंक 70–71 पृष्ठ 9') ।

मार्शल बर्गमैन ने आधुनिकता को जिस आधुनिकरण की देन मानते हुए अपनी मान्यता दी है उसके विरुद्ध इतिहासकार पेरी एण्डरसन ने बड़ी दिलचस्प बात कही, जिसका उल्लेख करते हुए नामवर सिंह ने कहा,'' मार्शल बर्गमैन की किताब की आलोचना करते हुए दूसरे मार्क्सवादी न्यू लेफ्ट रिव्यू के संपादक पेरी एंडरसन ने कहा कि आधुनिकता के बारे में यह एक बहुत बड़ा भ्रम है कि वह औद्योगिक और पूंजीवादी सभ्यता की उपज है और ऐसे युग की उपज है, जब यूरोप में पूंजीवाद अपने चरम रुप में मौजूद था। ध्यान रहे कि पेरी एंडरसन इतिहासकार भी हैं और उन्होंने इतिहास सम्बन्धी जो तीन पुस्तकें लिखी हैं, उनमें इंग्लैण्ड के पूंजीवाद का कैसा विकास हुआ इस पर काफी काम किया है। ठोस तथ्यों के आधार पर बताने की कोशिश की है कि वस्तुतः आधुनिकता इस तथाकथित औद्योगिकरण के प्रक्रिया के प्रथम चरण की सृष्टि नही है''। डा. नामकर सिंह लिखते हैं– संक्षेप में एंडरसन ने यह बताने की कोशिश की है कि और मुझे संगत प्रतीत होता है कि आधुनिकता बोध का उदय वास्तुतः एक अर्द्धसामंती, अर्द्धपूंजीवादी, अर्द्ध जनतांत्रिक सभ्यता, समाज व्यवस्था के बीच हुआ था। यही वजह है कि इस ऐतिहासिक कंजेक्शन में जो साहित्य पैदा हुआ था वह तथाकथित तीसरी दुनिया के अन्तर्गत माने जाने वाले देशों में, आधुनिकता वहाँ ज्यादा प्रासंगिक

हुयी, जबकि यूरोप में खत्म हो रही थी। आधुनिकतावाद यदि तथाकथित तीसरी दुनिया के देशों में लोकप्रिय हुआ है, हो रहा है तो इसका ऐतिहासिक कारण है। ये देश बहुत कुछ उसी प्रक्रिया से गुजर रहे है जिसमें पहले महायुद्ध के बाद और आस पास यूरोप गुजर रहा था। अब भी वही प्रि–कैपिटलिस्ट सोशल फार्मेशंस हमारे यहाँ हैं, जिसे हम लोग अर्द्ध सामंती, अर्द्ध पूंजीवादी कहते है । (वही पृष्ठ 10)

यहाँ पर यह प्रश्न विचारणीय है कि क्या यूरोपीय आधुनिकता हमारी परिस्थितियों में अपने समस्त आवेगों के साथ हमारी आधुनिकता हो सकती थी। वास्तव में यूरोपीय आधुनिकता यूरोपीय मनीषा के लिए सहज थी और यूरोपीय मनीषा अपनी औद्योगिक सांस्कृतिक और सम्पन्नता की विकृतियों के कारण उत्पन्न विमानवीकरण की त्रासद परिस्थितियों में अपने अस्तित्व के बारे में सोचने के लिये विवश हो सकती थी। इसलिए कि भौतिक समृद्धि की चकाचौंध में उभरी आत्मा कहीं खों गयी थी। यही वह 'एलीयनेशन' है, जिसमें यूरोप की मनीषा **संज्ञात** है, यही वह खास वजह भी है जिसके कारण पश्चिम में अस्तीत्ववाद चिंतक किर्कगार्द, नित्से, यास्पर्स, हेडेगर, ग्रैंबील, मार्सल, ज्यापाल सार्त्र, काफ्का और आल्वेयर कामू पैदा होते हैं और साथ ही एब्सर्ड रचनाकार सैमुअल वेकेट, यूजीन आवनेस्को, ज्या जेने, आदामोव, एडवर्ड आलंबो और पींटर पैदा होते हैं। यही वह एलीयनेशन है जिससे पाश्चात्य संसार पीड़ित है। पश्चिम को आधुनिक सभ्यता के नरक से मुक्ति दिलाने के लिए एक शताब्दी पूर्व कार्ल मार्क्स ने वैज्ञानिक दर्शन का सृजन किया था और ऐलीयनेशन के दर्शन को संघर्ष और क्रान्ति के दर्शन से जोड़ा था। इसलिये पश्चिम का तनाव सम्पन्नता का तनाव है। जबकि हमारे देश का तनाव निर्धनता का तनाव है। पश्चिम की सामाजिक और आर्थिक संरचना तथा हमारे देश की सामाजिक आर्थिक संरचना में यही मूलभूत अन्तर है पर ''पश्चिम की तकनीकि विकास का मनुष्य के मनोजगत पर **समग्रतः** प्रभाव पड़ा है। सह प्रभाव सीमा, सामाजिक समस्याओं और उसके दबावों के कारण और अधिक गहरा हुआ है। युद्धों की त्रासदी, भारतीय उपमहाद्विप में आधुनिक शस्त्रों का उपयोग और उससे उत्पन्न एक त्रासद उपस्थिति चाहे समान ना हो किन्तु उसने पूरी मानव जाति को प्रभावित किया है।'' (आधुनिकता साहित्य के सन्दर्भ में–गंगा प्रसाद विमल पृष्ठ 24)

आधुनिकता से उत्पन्न सामाजिक संकट को एक तरह से सांस्कृतिक संकट के रुप में देखा गया। यह सांस्कृतिक संकट ऐसा था, जिसके कारण अतीत की उपलब्धियों, ज्ञान विज्ञान, धर्म दर्शन, चिंतन पर पुनः सोचने के अतिरिक्त कोई विकल्प ही नजर नही आ रहा था। हिन्दुस्तान को यह दृष्टि और सीख उस समय पश्चिम के साथ टकराहट से मिली थी, जब हम अंग्रेजी उपनिवेश के अंग थे और भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक क्षेत्र का पश्चिमीकरण हो रहा था यानी जिसके माध्यम से आधुनिकता का प्रचार

प्रसार हो रहा था पर इस तरह के पश्चिमीकरण और आधुनिकता के खतरे भी थे। इस सम्बन्ध में एम0 एन0 श्रीनिवास ने लिखा हैः '' पश्चिमी और पश्चिम प्रेरित विद्वानों के कार्य के फलस्वरुप भारतीय सभ्यता के लिए नये और वास्तुनिष्ठ परिप्रेक्ष्य प्रकट हुए परन्तु अतीत की इस उपलब्धि में छिपे गड्ढे और खतरे भी थे। इसने सब शिक्षित भारतीयों में कुछ ना कुछ **पूरा केन्द्रिकता** उत्पन्न की। अतीत के मंथन में उर्जादायक कार्य किया और आधुनिक भारत को राष्ट्रीय आत्मपरिचय और विकास के लिए एक गूढ़ शक्ति प्रदान की। राष्ट्रीय चेतना की जागृति के साथ ही साथ प्रादेशिकता, साम्प्रदायिकता और जातिवाद का भी उदय हुआ, इससे उदयोन्मुख भारत के लिए गंभीर समस्याएं उत्पन्न हुयीं और आज भी हो रही हैं ।